INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 2

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" **मुख्य** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें**/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/9qwi7z

Online order करें - https://bit.ly/4lwfqPD

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	भारत का इतिहास	
1.	**भारतीय धरोहर** • सिन्धु घाटी सभ्यता • महत्त्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं • साहित्यिक स्त्रोत • उत्तरवैदिक कालीन प्रमुख यज्ञ	1
2.	**प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु** • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • पत्थर की मूर्तियाँ • आभूषण • मंदिर वास्तुकला • स्थापत्य कला • प्रमुख मंदिर • भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक • प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक • प्रमुख साहित्य • भारतीय चित्रकला एवं संगीत का विकास	14

3.	**प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन**
	• नए धार्मिक विचार
	  ○ बौध धर्म
	  ○ जैन धर्म
	  ○ वैष्णव धर्म
	• दर्शन शास्त्र
	• धर्म दर्शन
	• भक्ति तथा सूफी आंदोलन
	• सूफी सम्प्रदाय के प्रमुख संत
		64

4.	**19 वीं शताब्दी से 1965 तक आधुनिक भारत का इतिहास** • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय एवं उनके कार्य	124
5.	**स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन**	143

	• 1857 ई. की क्रांति • भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय • प्रेस (भारत में पत्रकारिता का विकास) • धार्मिक क्षेत्र में उपलब्धियाँ • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के प्रमुख कारण • उदारवादी आंदोलन • क्रांतिकारी आंदोलन का पतन • गाँधीवाद (1869-1948)	
6.	**19 वीं तथा 20 वीं शताब्दी में सामाजिक – धार्मिक सुधार आन्दोलन एवं बौद्धिक जागरण** • राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन • ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन • भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह	**207**
7.	**स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन** • 1945 – 1947 के बीच का भारत • देशी रियासतों का एकीकरण • नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास • विज्ञान एवं तकनीकी का विकास, महिला सशक्तिकरण एवं महिला सुधार आन्दोलन	**212**
	आधुनिक विश्व का इतिहास	
1.	**पुनर्जागरण व धर्म सुधार** • पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ • मानववाद • यूरोप में धर्म सुधार आंदोलन • धर्म सुधार आंदोलन के परिणाम • युद्ध के कारण	**231**
2.	**अमेरिका में स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति व औद्योगिक क्रांति एवं रुसी क्रांति** • अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम • अमेरिकी दृष्टिकोण में परिवर्तन • फ्रांसीसी क्रांति • फ्रांसीसी क्रांति की घटनाएँ • फ्रांसीसी क्रांति में दार्शनिकों का योगदान	**256**

	• *औद्योगिक क्रांति* • *औद्योगिक क्रांति के कारण* • *औद्योगिक क्रांति के परिणाम* • *कृषि के क्षेत्र में विकास* • *परिवहन एवं संचार में सुधार* • *रुसी क्रांति* • *रुसी क्रांति की प्रमुख घटनाएं*	
3.	***विश्व युद्धों का प्रभाव*** • *प्रथम महान युद्ध* • *प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव* • *राष्ट्र संघ का निर्माण* • *राजनीतिक परिणाम* • *द्वितीय विश्व युद्ध* • *शीत युद्ध*	***295***

अध्याय – I

भारतीय धरोहर

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा**
- **नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।
- यह भारत पाकिस्तान एव अफगानिस्तान में फेली हुई है

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है।

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- **प्रोटो-आस्ट्रेलायड** - सबसे पहले आयी
- **भूमध्यसागरीय** - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक हैं ।
- **मंगोलियन** - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।
- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2600 -1900 ई.पू.-NCERT के अनुसार
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

नदी में बाढ़ के कारण	मार्शल मैके एस.आर.राव
बाह्य आक्रमण	गार्डन चाइल्ड व्हीलर पिगट
जलवायु परिवर्तन	आरेल स्टाइन अमला नन्द घोष
प्राकृतिक आपदा	केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- ***सुत्कांगेडोर***- *इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।*
- *सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।*

मोहनजोदड़ो	=	*हड़प्पा*
चन्हूदड़ो	=	*डेराइस्माइल खाँ*
कोटदीजी	=	*रहमान टेरी*
आमरी	=	*गुमला*
अलीमुराद	=	*जलीलपुर*

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- ***हरियाणा- राखीगढ़ी,*** *सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू*
- ***पंजाब –*** *कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल*
- ***कश्मीर*** *- माण्डा*
  - *चिनाब नदी के किनारे*
  - *सभ्यता का उत्तरी स्थल*
- ***राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल***
  - *तरखान वाला डेरा*
- ***उत्तर प्रदेश***- *आलमगीरपुर*

  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - *माण्डी*
  - *बड़गाँव*
  - *हलास*
  - ***सनौली***
- ***गुजरात***

  धौलावीरा, *सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर,* ***लोथल,*** *रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार*
- ***महाराष्ट्र***- *दैमाबाद*
  - *सभ्यता की दक्षिणतम सीमा*
  - *फैलाव- त्रिभुजाकार*
  - *क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर*
  - *पूर्व से पश्चिम -1400 km*
  - *उत्तर से दक्षिण -1600 km*

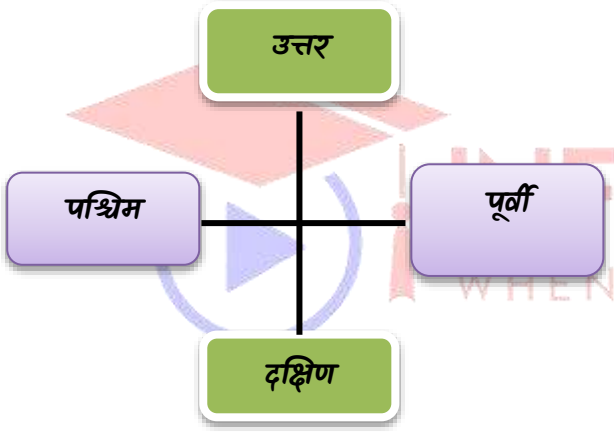

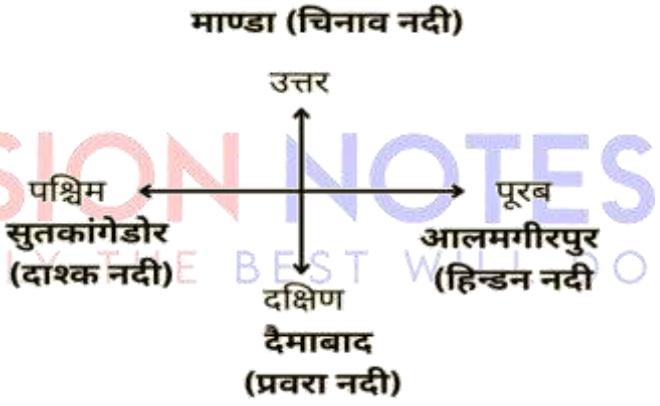

स्थल	***नदियों के नाम***	***उत्खन्न का वर्ष***	***उत्खननकर्ता***	***वर्तमान स्थिति***
हड़प्पा	*रावी*	*1921*	*दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स*	*पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)*
मोहनजोदड़ो	*सिन्धु*	*1922*	*राखलदास बनर्जी*	*सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)*
कालीबंगा	*घग्घर*	*1961*	*बी. बी. लाल और बी. के. थापर*	*राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)*
कोटदीजी	*सिन्धु*	*1955*	*फजल अहमद*	*सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)*
रंगपुर	*भादर*	*1953-54*	*रंगनाथ राव*	*गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)*
रोपड़	*सतलज*	*1953-56*	*यज्ञदत्त शर्मा*	*पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)*
लोथल	*भोगवा*	*1955 तथा 1962*	*रंगनाथ राव*	*गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).*
आलमगीरपुर	*हिंडन*	*1958*	*यज्ञदत्त शर्मा*	*उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)*

बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

- **हड़प्पा**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

  खोज- वर्ष 1921 में

  उत्खनन-
  - 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
  - 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
  - 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा
- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- स्वस्तिक का निशान ,मोहरे
- नदी के किनारे 12 अन्नागार मिलते है
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।
- पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी।

स्थिति-

- लरकाना (सिंध प्रान्त) पाकिस्तान
- सिन्धु नदी के तट पर
- **उत्खनन** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं ।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं ।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला **विशाल स्नानागार** भी यहीं से प्राप्त हुआ है।
- मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण
- इसमे उत्तर व दक्षिण में सीडियां बनी हुई है
- तीन तरफ बरामदे है बरामदे के पीछे कई कक्ष है
- सूती कपड़ो के साक्षय मिले है
- हाथी का कपाल खंड मिला है
- नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है इसने एक हाथ में चूड़िया पहन रखी है
- मेसोपोटामिया की मुहर मिली है
- पशुपति नाथ की मुहर मिली है इसके बायीं ओर गेंडा व भैंसा तथा दाई ओर बाघ और हाथी तथा सामने दो हिरन है

कालीबंगा-

- खोज **अमलानन्द घोष** द्वारा **गंगानगर** में
- **सरस्वती नदी** (वर्तमान **घग्घर** के तट पर)
- कालीबंगा **वर्तमान में हनुमानगढ़** में है ।
- **उत्खनन - बी.बी लाल** 1953 में
  - वी. के. थापड़
  - खरे

❖ भारतीय नृत्य कलाएं

▪ भारतीय शास्त्रीय नृत्य

- भारत में नृत्य प्राचीन काल से एक समृद्ध और प्राचीन परंपरा रही है। विभिन्न कालों की खुदाई शिलालेखों ऐतिहासिक वर्णन राजाओं की वंश परंपरा तथा कलाकारों साहित्यिक स्रोतों, मूर्तिकला और चित्रकला से व्यापक प्रमाण उपलब्ध होते हैं।
- साहित्य में पहला संदर्भ वेदों से मिलता है, जहाँ नृत्य व संगीत का उद्गम है। भारतीय नृत्य कला का एक ज्यादा संयोजित इतिहास महाकाव्यों अनेक पुराण, कवित्व साहित्य तथा नाटकों का समृद्ध कोष जो संस्कृत में काव्य और नाटक के रूप में जाने जाते हैं। से पुर्ननिर्मित किया जा सकता है।
- शास्त्रीय संस्कृत नाटक का विकास एक वर्णित विकास है जो मुखरित शब्द मुद्राओं और आकृति ऐतिहासिक वर्णन, संगीत तथा शैलीगत गतिविधि का एक सम्मिश्रण है। खुदाई से दो मूर्तियां प्रकाश में आई एक मोहनजोदड़ो की कांसे की मूर्ति और दूसरा हड़प्पा का एक टूटा हुआ धड़। यह दोनों मूर्तियां नृत्य मुद्राओं की सूचक है। बाद में नटराज आकृति के अग्रदूत के रूप में इसे पहचाना गया, जिसे आमतौर पर नृत्य करते हुए शिव के रूप में पहचाना जाता है।
- भरत मुनि का नाट्यशास्त्र शास्त्रीय नृत्य पर प्राचीन ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है, जो नाटक नृत्य और संगीत की कला की स्रोत पुस्तक है। नाट्यशास्त्र को पांचवें वेद के रूप में माना जाता है। लेखक के अनुसार उसने इस वेद का विकास ऋग्वेद से शब्द सामवेद से संगीत। यजुर्वेद से मुद्राएं और अथर्ववेद से भाव लेकर किया है।
- नाट्यशास्त्र में सूत्रबद्ध शास्त्रीय परंपरा की शैली में भारतीय नृत्य कला और संगीत नाटक के अलंघनीय भाग है। नाटक की कला में इसके सभी मौलिक अंशों को रखा जाता है और कलाकार स्वयं नर्तक तथा गायक होता है।
- प्रस्तुतकर्त्ता स्वयं तीनों कार्यों को संयोजित करता है। समय के साथ-साथ जबकि भारतीय नृत्य कला अपने आप नाटक से अलग हो गया और स्वतंत्र तथा विशिष्ट कला के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।
- प्राचीन शोध-निबंधों (नाट्यशास्त्र) के अनुसार भारतीय नृत्य कला में तीन पहलुओं पर विचार किया जाता है- नाट्य, नृत्य और नृत्त।

नाट्य

- नाट्य में नाटकीय तत्त्व पर प्रकाश डाला जाता है। कथकली नृत्य-नाटक रूप के अतिरिक्त आज अधिकांश नृत्य रूपों में इस पहलू को व्यवहार में कम लाया जाता है।

नृत्य

- नृत्य मौलिक अभिव्यक्ति है और यह विशेष रूप से एक विषय या विचार का प्रतिपादन करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।
- नृत्त दूसरे रूप से शुद्ध नृत्य है। जहां शरीर की गतिविधियां न तो किसी भाव का वर्णन करती है और न ही वे किसी अर्थ को प्रतिपादित करती है।

नवरस

- नृत्य और नाटक को प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए एक नर्तकी को नवरसों का संचार करने में प्रवीण होना चाहिए।

भरतनाट्यम

- भरतनाट्यम भारतीय नृत्य कला शैली का विकास तमिलनाडु में हुआ। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से भारतीय नृत्य कला की इस शैली की जानकारी प्राप्त होती है। भरतनाट्यम का नाम भरतमुनि तथा नाट्यम शब्द से मिलकर बना है। तमिल में नाट्यम शब्द का अर्थ नृत्य होता है।
- नंदिकेश्वर द्वारा रचित अभिनय दर्पण भरतनाट्यम नृत्य में शरीर की गतिविधि के व्याकरण और तकनीकी अध्ययन के लिए ग्रंथीय सामग्री का एक प्रमुख स्त्रोत है।
- चिंदबरम मंदिर के गोपुरमों पर भरतनाट्यम नृत्य की भंगिमाओं की एक श्रृंखला और मूर्तिकार द्वारा पत्थर को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं देखी जा सकती है।
- भरतनाट्यम नृत्य को एकहार्य के रूप में भी जाना जाता है, जहां नर्तकी एकल प्रस्तुति में अनेक भूमिकाएं करती है। राजा सरफोजी के संरक्षण के तहत तंजौर के प्रसिद्ध चार भाइयों ने भरतनाट्यम के उस रंगपटल का निर्माण किया था, जो हमें आज दिखाई देता है।
- देवदासियों द्वारा इस शैली को जीवित रखा गया। देवदासी वास्तव में वे युवतियाँ होती थीं। जो अपने माता-पिता द्वारा मंदिर को दान में दे दी जाती थी। उनका विवाह देवताओं से होता था।
- देवदासियाँ मंदिर के प्रांगण में देवताओं को अर्पण के रूप में संगीत व नृत्य प्रस्तुत करती थीं। इस सदी के कुछ प्रसिद्ध गुरुओं और अनुपालकों का संबंध देवदासी परिवारों से है जिनमें बाला सरस्वती एक बहुत परिचित नाम है।
- भरतनाट्यम का रंगपटत बहुत विस्तृत होता है जबकि प्रस्तुतीकरण में नियमित ढांचे का अनुकरण किया जाता है। सबसे पहले यहां स्तुति-गान होता है।

भरतनाट्यम की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएं

अलारिपू

- इसका शाब्दिक अर्थ है- फूलों से सजावट। यह प्रदर्शन का आह्वानकारी भाग है, जिसमें आधारभूत नृत्य मुद्राएं सम्मिलित होती है। यह ध्वनि अक्षरों के पठन के साथ नृत्य संयोजन का एक अमूर्त खण्ड है।

जातिस्वरम्

- यह एक लघु शुद्ध खण्ड है, जो कर्नाटक संगीत के किसी राग के संगीतात्मक स्वरों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

जातिस्वरम् में साहित्य या शब्द नहीं होते पर अडपू की रचना की जाती है, जो शुद्ध नृत्य-क्रम-नृत्य' होते है।

- यह भरतनाट्यम् नृत्य में प्रशिक्षण के आधारभूत प्रकार है।

शब्दम

- यह गीत में अभिनय को समाविष्ट करने वाला नाटकीय तत्व है। साथ में गाया जाने वाला गीत आमतौर पर सर्वोच्च सत्ता (ईश्वर) की आराधना होती है।

वर्णनम्

- यह भरतनाट्यम रंगपटल की एक बहुत महत्त्वपूर्ण रचना है, उसमें इस शास्त्रीय नृत्य-रूप के तत्त्व का सारांश और नृत्य तथा नृत्त दोनों का सम्मिश्रण होता है। यहां नर्तकी दो गतियों में जटिल लयात्मक नमूने प्रस्तुत करती हैं और नृत्य कलाकार की अंतहीन रचनात्मकता का प्रतिबिम्ब भी है। यह ताल और राग के साथ समकालिक नृत्य तथा भावों का मेल है।

पद्म

- यह प्रेम और बहुधा दैविक पृष्ठभूमि पर आधारित होता है। यह अभिनय के ऊपर कलाकार की महारथता को प्रदर्शित करता है। इसमें सात पंक्तियुक्त वंदना होती है।

जवाली

- यह भी प्रेम पर आधारित होता है। यह अपेक्षाकृत तीव्र गति के साथ प्रस्तुत लघु प्रेमगीति काव्य होता है।

तिल्लाना

- भरतनाट्यम प्रस्तुतीकरण का अंत तिल्लाना के साथ होता है, जहाँ इसकी उत्पत्ति हिंदुस्तानी संगीत के तराना में होती है। इस अंग में बहुविचित्र नृत्य भंगिमाओं के साथ-साथ नारी के सौंदर्य के अलग-अलग लावण्यों को दिखाया जाता है।
- यह एक अनुनादी (गुंजायमान) नृत्य है, जो साहित्य की कुछ पंक्तियों के साथ तथा संगीत के कुछ अक्षरों के साथ-साथ प्रस्तुत किया जाता है। विशिष्ट रूप से अभिकल्पित लयात्मक पंक्तियों के एक चर्मोत्कर्ष पर पहुंचने के साथ खण्ड का समापन होता है।
- प्रस्तुतीकरण का अंत मंगलम भगवान के आशीर्वचन मांगने के साथ होता है। भरतनाट्यम् नृत्य के संगीत वाद्य मंडल में एक गायक एक बांसुरी वादक, एक मृदंगम वादक एक वीणा वादक और एक करताल वादक होता है। जो व्यक्ति नृत्य का कविता-पाठ करता है, वह नट्टवनार होता है,

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 20वीं शताब्दी में रुकमणी देवी अंरुडेल और ई कृष्ण अय्यर के प्रयासों ने भारतीय नृत्य कला इस शैली को पर्याप्त सम्मान दिलाया।
- प्रमुख कलाकार पद्मा सुब्रह्मण्यम अलारमेल वल्ली यामिनी कृष्णमूर्ति अनिता रत्नम मृणालिनी साराभाई मल्लिका साराभाई, मीनाक्षी सुंदरम पिल्लई सोनल मानसिंह, स्वप्न सुंदरी रोहिंगटन कामा और राधा रेड्डी तथा राजा रेड्डी।

कथकली नृत्य-

- कथकली नृत्य केरल का शास्त्रीय नृत्य है। आज कथकली एक प्रचलित नृत्य है। यह एक कला है जो प्राचीन काल में दक्षिणी प्रदेशों में प्रचलित बहुत से सामाजिक और धार्मिक रंगमंचीय कला रूपों से उत्पन्न हुई है।
- चाकिदारकुत्त, कूडियाट्टम कृष्णानाट्टम और रामानाट्टम केरल की कुछ अनुष्ठानिक निष्पादन कलाएं हैं, जिनका कथकली के प्रारूप और तकनीक पर सीधा प्रभाव है। केरल के मंदिरों के शिल्पों और लगभग 16वीं शताब्दी के मट्टानचेरी मंदिर के भित्तिचित्रे में वर्गाकार तथा आयताकार मौलिक मुद्राओं को प्रदर्शित करते नृत्य के दृश्य देखे जा सकते हैं जो कथकली की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं।
- कथकली नृत्य संगीत और अभिनय का वर्णन है। इसमें अधिकतर भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है। यह शैलीबद्ध कला रूप है इसमें अभिनय के चार पहलू- अंगिका, अहार्य वाचिका सात्विका और नृत्त / नृत्य तथा नाट्य पहलुओं का सम्मिश्रण है।
- नर्तक अपने भावों को विधिबद्ध हस्तमुद्राओं और चेहरे के भागों से अभिव्यक्त करता है। इसके पश्चात् (पद्य) पद्यात्मक भाग होता है जिन्हें गाया जाता है। कथकली नृत्य शैली अपनी मूल पाठ विषयक स्वीकृति बलराम भरतम् और हस्तलक्षण दीपिका से प्राप्त करती है। आट्टाक्कथा या कहानियों को महाकाव्यों तथा पौराणिक कथाओं से चुना जाता है। इन्हें उच्च स्तरीय संस्कृत पद्य रूप में मलयालम भाषा में लिखा जाता है। कथकली नृत्य का संगीत केरल के परंपरागत सोपान संगीत का अनुसरण करता है।
- कथकती नृत्य में कर्नाटक रागों का भी प्रयोग होता है और कर्नाटक राग के अंतर्गत राग और थाट । भाव रस और नृत्य के प्रतिरूपों नृत्त और नाट्य की पुष्टि होती है। वाद्य समूह में जो केरल की अन्य निष्पादन कताओं में भी प्रयोग में लाया जाता है। विधिवत, चेंडा, मछलम, इलसालम इडक्का और शंख को सम्मिलित किया जाता है।
- कथकली एक दृश्यात्मक कला है, जहां पात्र के अनुसार अहार्य वेशभूषा और श्रृंगार नाट्य शास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित होता है। पात्रों को कुछ स्पष्ट रूप से परिभाषित प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है, जैसे

  1. पच्चाहराद
  2. कुत्ती काठी चाकू
  3. ताड़ी थोड़ी) तीन रूपों में ताल सफेद काली
  4. करि या मिनुक्कू काली पॉलिश

- कलाकार के चेहरे को कुछ इस प्रकार रंग दिया जाता है कि वह मुखौटे का आभास देता है। होठों भौंहों और पलकों को उभारकर दिखाया जाता है।
- कथकली नृत्य मुख्यतः व्याख्यात्मक होता है। इसके प्रस्तुतीकरण में पात्रे को मोटे तौर पर सात्विका राजसिक और तामसिक वर्गों में विभक्त किया जाता है।

सात्विका

- सात्विका चरित्र कुलीन, वीरोचित, दानशील और

- अकबर के तस्वीरखाना में 17 कलाकार थे। जिनमें दसवंत सबसे प्रमुख था। इसने रज्मनामा का चित्रण किया।
- अकबर के दरबार में तानसेन प्रमुख गायक था, जो ध्रुपद गायक था।
- अमीर खुसरो ने सर्वप्रथम भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया । इन्हें सितार तथा तबले के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है।
- चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन शैली को जन्म दिया तथा उत्तर भारत में लोकप्रिय किया ।

अध्याय – 3

प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

☞ **मौर्य वंश**

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

☞ **चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)**

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**

- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।

☞ मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सैंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।

☞ बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।

☞ अशोक महान

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं।
- **अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।**
- सर्वप्रथम **मास्की लेख** में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।

कलिंग युद्ध

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- कलिंग विजय के नरसंहार से सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया।
- अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।

अभिलेखों की भाषा

- **प्राकृत (अधिकांश इसी भाषा में।)**
- **यूनानी**
- **अरामाइक**

- **अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।**
- अशोक के **वृहद शिलालेख** (पहाड़ियों पर) **। से 14 तक थे।**
- अशोक के प्रथम वृहद शिलालेख में पशु हत्या को निषेध बताया है।
- इसका 12वाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसके शासन काल में **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।**
- अशोक महान द्वारा प्रचारित की गई **नीतिगत शिक्षा को अशोक का धम्म** कहा गया।
- अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए भेजे गये प्रचारक-
  सोन एवं उत्तरा- स्वर्णभूमि में
  महेन्द्र एवं संघमित्रा- श्रीलंका
  महारक्षित - यवन प्रदेश
  रक्षित - वनवासी (उ० कनाडा)
- अशोक के बाद उसके उत्तराधिकारी निर्बल तथा कमजोर हुए। उन्होंने साम्राज्य का बंटवारा कर लिया। 50 वर्षों के भीतर ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

अशोक के वृहद् शिलालेखों में उल्लेखित 14 आदर्श

- प्रथम शिलालेख - खर्चीले समारोह पर प्रतिबंध, पशु-बलि निषेध, सभी मनुष्य मेरी संतान.....।
- द्वितीय शिलालेख - दक्षिण के पड़ौसी राज्यों (चोल, पांड्य, सत्तियपुत्त एवं केरलपुत्त) तथा ताम्रपर्णी का उल्लेख, कल्याणकारी कार्यों का वर्णन
- तृतीय शिलालेख युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक महामात्य आदि की नियुक्ति का उल्लेख।
  - **चतुर्थ शिलालेख** - 'धम्म' का उल्लेख।
  - **पंचम शिलालेख** - धम्म महामात्रों की नियुक्ति।

अध्याय – 4

17वीं शताब्दी से 1965 तक आधुनिक भारत का इतिहास

❖ आधुनिक भारत का विकास

☞ यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→स्वीडस

वास्को-डी-गामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। **भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।** पुर्तगाली व्यापारी वास्को-डी-गामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा।
- वास्को-डी-गामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया। **पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।**
- भारत आने और जाने में हुए यात्रा व्यय के बदले में उसने 60 गुना अधिक धन कमाया। धीरे – धीरे अन्य पुर्तगाली व्यापारी भारत में आने लगे भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव और हुगली के बन्दरगाहों पर पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की

नोट :- पेट्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।

- 1502 ई. में वास्को-डी-गामा पुनः भारत आया था।
- पुर्तगाली :- **1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।**
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

☞ फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 – 1509]

- **यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर / वायसराय बनकर आया था।** इसने 1509 में मिस्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया।
- इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था कि यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो **(उसके द्वारा अपनाई नीति नीले या शांत जल की नीति कहलाई)**
- **यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरु की थी।**
- पुर्तगाल की राजधानी –लिस्बन

☞ अल्फांसो डी. अल्बुकर्क (1509 – 1515)

- भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।
- जो सर्वप्रथम 1509 ई. में भारत आया और उसी समय (1509 ईस्वी) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई. में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई. पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- **1511 ई. में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया।**
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में **सती प्रथा बन्द करवा दी।**
- **अल्बुकर्क राजा राममोहन राय का पूर्व गामी था।**
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

☞ निन्हो डी. कुन्हा (1529-1538)

- अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हो डी. कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया।
- **कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।**
- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सैंनथोमा मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया।
- **भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ।**
- पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।
- मुग़ल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ।
- **भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण एवं तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुई।**
- **पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की।**
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- 'अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई।

- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।

कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था।

इन जहाजों में **काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।**

पुर्तगालियों के पतन के कारण

- पुर्तगालियों का भ्रष्ट शासन, दोषपूर्ण व्यापार प्रणाली, धार्मिक और वैवाहिक नीति, योग्य शासकों का अभाव, स्पेन द्वारा पुर्तगाल का विलय, डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती आदि पुर्तगालियों के पतन के कारण बनें ।

पुर्तगालियों की भारत को देन

- **मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।**
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई.) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- **पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।**

❖ **डच**

- डच पुर्तगालियों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कम्पनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड था, की स्थापना 1602 में की थी। वास्तविक नाम वेरीगीडे ओस्त इन्डिशे कम्पनी था ।
- **डचों ने भारत में अपनी "प्रथम फैक्ट्री" 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की ।**
- डचों का भारत में प्रथम दल "कार्नेलियस डी हाउटमैन के नेतृत्व में भारत आया । वह भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था ।
- डचों नें 1602 ई. में गुजरात, कोरोमण्डल तट एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- डचों ने मसूली पट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली ।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627' में पीपली - (स्थाई कम्पनी) में स्थापित की।
- **'1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।**
- चिनसुरा (बंगाल) में डचों ने गुस्ताबुस नामक किले का निर्माण किया।
- इसके बाद डचों ने 'कासिमबाजार' और 'पटना' में फैक्ट्री स्थापित की।
- कोचीन और कन्नानोर डचों के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
- '1690 ई.' के बाद पुलीकट के बदले नागपट्टनम डचों का मुख्य केन्द्र बन गया।
- **डच मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, वस्त्र, अफीम व शोरा का व्यापार करते थे।**
- डचों की **व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (Cartel) पर आधारित थी।**
- '1759' में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ, जिसमें डच पराजित हुए और उनका भारत से अन्तिम रुप से पतन हो गया।
- बेदरा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लॉर्ड क्लाइव ने किया।

नोटः- 'मसूली पट्टनम और सूरत से' डच 'नील' का निर्यात करते थे । भड़ौच बन्दरगाह से डच कपड़े का निर्यात करते थे।

- पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) डालते थे ।
- सूती कपड़ा, रेशम, अफीम तथा शोरा बंगाल से डचों द्वारा निर्यात किये जाते थे।
- भारत में अफीम डचों द्वारा जावा और चीन में निर्यात किया जाता था।
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था।
- डच कम्पनी के निदेशकों को भद्रजन XVII कहा जाता था।

❖ **अंग्रेज**

भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जॉन मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।

- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई.' में समुद्री मार्ग से होकर (Red Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- हॉकिन्स प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि पर समुद्री मार्ग से प्रवेश किया था ।
- 1599 ई. में लन्दन में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading into the east Indies नामक कम्पनी की स्थापना पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 दिसम्बर 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को '15 वर्षों के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी ने '1608 ई.' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।
- '1609 ई.' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से आगरा में मिला था।
- **जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खान की उपाधि' दी।**
- कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- हॉकिन्स ने जहाँगीर से सूरत में एक अंग्रेजी कम्पनी खोलने की अनुमति प्रदान कर ली, परन्तु मुग़ल दरबार में पुर्तगाली

प्रतिद्वन्द्वी सौदाचारों के कारण वह अनुमति शीघ्र ही रद्द कर दी गई ।

- '1611 ई.' में हॉकिन्स इंग्लैण्ड लौट गया।
- '1613 ई.' में जहाँगीर ने अंग्रेजों को सूरत में स्थाई रूप से एक कोठी खोलने की अनुमति दी।
- हॉकिन्स के वापस जाने के बाद '1615 ई.' में जेम्स प्रथम ने सर टॉमस रो को मुग़ल दरबार में भेजा।
- 10 जनवरी 1616 ई. में टॉमस रो जहाँगीर से अजमेर में मिला था।
- सर टॉमस रो 3 वर्ष तक'राजदूत' के रूप में अजमेर, माण्डू, इलाहाबाद में रहा।
- फरवरी 1619 में सर टॉमस रो इंग्लैण्ड वापस चला गया।
- 1623 ई. तक अंग्रेजों ने सूरत, भड़ौंच, अहमदाबाद, मसूली-पट्टनम, आगरा और अजमेर में कोठियाँ स्थापित कर ली थी।
- **1640 ई. में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की** और आत्मरक्षा के लिए वहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया और उसका नाम **'सेंट जॉर्ज का किला' ('फोर्ट सेंट जॉर्ज)** रखा।
- 1651 ई. में बंगाल में व्यापार विस्तार करने के उद्देश्य से ब्रिजमैन के नेतृत्व में हुगली में भी एक कोठी खोली।
- हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना तथा राजमहल में अंग्रेजी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- **1661 ई. में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी केथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रूप में बम्बई बन्दरगाह मिला था।**
- चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई. में बम्बई बन्दरगाह को दस-पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया ।
- **बम्बई का वास्तविक संस्थापक 'गेराल्ड आंगियार' को माना जाता है।**
- **ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के समय भारत में सम्राट अकबर (1600 ई.) का शासन था।**
- अंग्रेजों ने हार्मुज बन्दरगाह को पुर्तगालियों से 1604 ई. में जीता था।
- **अंग्रेजों को 1632 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान ने सुनहरा-फरमान (Golden farmam) दिया,** जिसके मुताबिक 500 पैगोडा सालाना कर देने पर उन्हें गोलकुण्डा राज्य के बन्दरगाहों में व्यापार करने की अनुमति मिली ।
- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् 1715 में कम्पनी ने मुग़ल दरबार में जॉन सारमन की अध्यक्षता में एक शिष्ट मण्डल भेजा।
- शिष्ट मण्डल में विलियम हैमिल्टन शल्य चिकित्सक था जिसने फर्खुसियर को एक भयंकर रोग से स्वस्थ्य किया ।

बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना

- बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 1651 ई. में एक फरमान जारी कर बंगाल में तीन हजार रुपये वार्षिक कर के बदले व्यापार का विशेषाधिकर 'अंग्रेजों'को प्रदान किया ।
- 1686 ई. में अंग्रेजों एवं औरंगजेब की भिडन्त हुई (कारण हुगली में अंग्रेजों द्वारा लूट) लड़ाई में अंग्रेजों की हार हुई एवं अंग्रेजों को हुगली छोड़ना पड़ा।
- औरंगजेब ने अंग्रेजों से 1,50,000 रु. हर्जाना लेकर पुनः व्यापार की छूट प्रदान कर दी।
- 1698 ई. में बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-शान ने सूतानती, कोलकाता व गोविंदपुर की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप दी।
- **जॉब चॉरनाक ने सूतानूती, कोलकाता एवं गोविंदपुर को मिलाकर एक नये नगर 'कलकत्ता' की स्थापना की।**
- 1700 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किले की स्थापना की गई। इसका गवर्नर - चार्ल्स आयर को बनाया गया।
- फर्रुखसियर के फरमान :- कलकत्ता के आस-पास 38 गाँव खरीदने का अधिकार दिया ।
- सूरत में 10,000 रु. वार्षिक देने पर कम्पनी के समस्त आयात-निर्यात को कर मुक्त कर दिया गया।

❖ **डेनिस या डेन कम्पनी**

- अंग्रेजों के बाद भारत में डेनिस व्यापारी 1616 ई. में आये।
- **डेन लोगों ने अपनी प्रथम फैक्ट्री 1620 ई. में तंजौर के ट्रानकोबार (Tamil Nadu) में स्थापित की ।**
- डेन लोगों ने दूसरी फैक्ट्री 1676 ई. में बंगाल के सेरामपुर में स्थापित की ।
- डेनिशों ने भारत में लगभग 125 वर्षों तक व्यापार किया।
- इनके व्यापार में लगातार गिरावट होने के कारण 1745 ईस्वी में इन्होंने अपनी सभी फैक्ट्रियाँ अंग्रेजों के हाथों कम दामों में बेच दी एवं भारत छोड़कर चले गये।

❖ **फ्रांसीसी**

- भारत में व्यापारिक दृष्टि से सबसे अन्त में फ्रांस के व्यापारी आये ।
- फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कॉलबर्ट के लगातार प्रयासों के बाद 1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई।
- जिसका नाम कम्पने देस इन्डेस ओरियन्टलेस रखा गया। इस कम्पनी का निर्माण फ्रांस की सरकार द्वारा किया गया। इसका सारा खर्चा भी सरकार ही वहन करती थी ।
- 1667 ई. में फ्रेंसिस केरॉन या फ्रेंको कैरो की अध्यक्षता में एक दल भारत आया ।
- इस **दल ने 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री (फ्रांसीसी) स्थापित की।**
- फ्रांसीसियों ने 1669 ई. में मसूली पट्टनम में दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।
- 1673 ई. में फ्रेंसिस मार्टिन ने सूबेदार शेर खाँ लोदी से पंडूचेरी नामक एक गाँव प्राप्त किया जो बाद में पाण्डिचेरी नाम से जाना गया।
- फ्रेंसिस मार्टिन ने पाण्डिचेरी में फोर्ट लुई का निर्माण कराया।
- इसीलिए फ्रेंसिस मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

- **प्रेस (भारत में पत्रकारिता का विकास)**
- प्रेस तथा पत्रकारिता के उदय ने आधुनिक युग के दौरान एक नई चेतना को जन्म दिया। छपाई तकनीक के विस्तार ने पुस्तकों को आसानी से उपलब्ध कराया।
- दूसरे शब्दों में, छपाई ने भारत में संवाद के मार्ग खोले। छपाई की नई तकनीक ने पत्रकारिता तथा प्रेस की प्रगति में अहम भूमिका निभाई। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी भाषा में समाचार पत्र का प्रकाशन आरंभ हो गया। 19वीं शताब्दी के दौरान स्थानीय भाषाओं में भी कई पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हो गया। जेम्स ऑगस्टसहिक्की ने सन् 1780 में बंगाल गजट के नाम से भारत में पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया। इसके पश्चात् बंगाल, मुम्बई तथा मद्रास से समाचार पत्रो की श्रृंखला आरंभ हो गई। कुछ मुख्य समाचार पत्र थे-कलकत्ता क्रोनिकल (1786) मद्रास कुरियर (1788) तथा बाम्बे हेराल्ड (1789)।
- ब्रिटिश के आरंभिक समाचार पत्र भारत में रह रहे यूरोपीय तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए प्रकाशित होने थे। हालांकि कंपनी के अधिकारी अपने द्वारा किए जा रहे दुष्कृत्यों के समाचारों से चिंतित थे, अतः तमाम तरह के प्रतिबंध लागू किये गए। लॉर्ड वेलेस्ली (1796-1804) ने 1799 में सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट के जरिए कड़े प्रतिबंध लगाए। इस अधिनियम में चेतावनी दी गई। कि सभी सूचनाएं सरकार के सचिव द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए। प्रकाशक, संपादक तथा मालिक का नाम हर अंक में उल्लिखित होना चाहिए। लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23) ने 1818 ई. में इनमें से कुछ नियमों में ढील दी तथा प्रेस से प्री-सेंसरशिप हटा ली। हालांकि, यह ढील अस्थायी ही सिद्ध हुई क्योंकि 1823 में कार्यवाहक गवर्नर जनरल का पद संभालने वाले जॉन एडम्स ने इसी वर्ष कुछ और कड़े नियम प्रेस पर थोप दिये। किसी प्रेस का संचालन करने एवं प्रयोग करने के लिए लाइसेंस का होना आवश्यक कर दिया गया। गवर्नर जनरल के पास
- लाइसेंस निरस्त करने का अधिकार था।
- बाद के गवर्नर जनरल चार्ल्स मेटेकैफे (1835-1836) स्व तंत्र प्रेस के पक्षधर थे। उन्होंने 1823 के नियमों को निरस्त कर दिया गया। मेटकैफे प्रेस अधिनियम चाहता था कि प्रकाशक केवल अपने नाम तथा प्रकाशन के स्थान एवं परिसर की घोषणा कर दे। इस उदारवादी कदम ने प्रेस की प्रगति पर सकारात्मक प्रभाव डाला तथा 1857 तक जब तक कि विद्रोह के चलते पुनः कड़े नियम नहीं लगाये गए बड़ी संख्या मे समाचार पत्र प्रकाशित हुए। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र पर सबसे कठोर प्रतिबंध लॉर्ड लिटन का वर्नाकुलर प्रेस एक्ट 1878 का था। एक अत्यन्त ही रंगभेदी तथा भेदभाव वाले इस अधिनियम ने सरकार के खिलाफ भारतीय भाषाओं की अभिव्यक्ति का गला घोंटने का प्रयास किया। ये प्रतिबंध ब्रिटिश समाचार पत्रों पर लागू नहीं हुए। यह लिटन की रूढ़िवादी तथा घमंडी सोच का परिचायक था। इसने सरकार को अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय बुद्धिजीवियों की लेखनी पर नियंत्रण का अधिकार दे दिया। जिलाधिकारी के विरुद्ध अपील करने का प्रावधान नहीं था। इस अधिनियम को सन् 1882 में लॉर्ड रिपन द्वारा बदल दिया गया जो अपने उदारवादी दृष्टिकोण की वजह से भारतीय जनता में बहुत लोकप्रिय था।
- **19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ**
- उदय के कारण आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों में चेतना आई की औपनिवेशिक शासन का मूल कारण भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में मौजूद कुरुतियाँ हैं अतः उन्हें दूर करना चाहिए ।
- इस क्रम में सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुआ स्थायीकरण की प्रवृत्ति ने भी भारतीयों को अपने धर्म एवं समाज को बचाने के लिए प्रेरित किया वस्तुतः ईसाई मिशनरी भारतीयों के पिछड़ेपन का कारण उनके परम्परागत धर्म को बताते थे अतः भारतीय धर्म और समाज सुधार से समाज को कर्मकांड मुक्त करने पर बल दिया ।
- पश्चिमी मानवतावादी चिंतन ने भारतीयों में सुधारों के प्रति चेतना जागृत की वस्तुत यूरोप के आधुनिक चिंतन में भारतीयों को भी मानवतावादी दृष्टिकोण से युक्त किया इसी क्रम में सुधारकों ने मानव की एकता पर बल देते हुए छुआछूत अस्पृश्यता पर चोट की पत्र-पत्रिकाओं ने भी सुधार आंदोलन को प्रेरित किया।
- वस्तुतः पत्र-पत्रिकाओं में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति किए जाने वाले अपमान जनक व्यवहारों का उल्लेख रहता था फलतः अपने धर्म और समाज में व्याप्त सती प्रथा, छुआछूत जैसी परम्पराओं को समाप्त कर समाज को स्वच्छ बनाकर उस पर अपमान से बचने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन शुरू हुआ

स्वरूप

1. मूल्य का सामाजिक सुधार स्वरूप

- इस आंदोलन का मूल लक्ष्य सामाजिक सुधार करना था वस्तुतः समाज में मौजूद कुरुतियाँ का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था अतः धर्म में सुधार के बगैर सामाजिक सुधार संभव नहीं था इस दृष्टि से यह मूलतः सामाजिक सुधार आंदोलन था।

2. मध्यम वर्गीय स्वरूप

- यह आंदोलन मध्यम वर्ग के स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है वस्तुतः सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व मध्यमवर्गीय के हाथों में था ।
- आंदोलन का प्रसार भी नगरीय क्षेत्रों में रहा प्रचार प्रसार हेतु सुधारकों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन किया और जिसकी पहुँच मध्यम वर्ग तक थी इस तरह सुधारकों द्वारा उठाई गई कुछ मांगे जैसे सती प्रथा बहू पत्नी प्रथा की समाप्ति प्राय से संबंधित है इस राष्ट्रीय से यहाँ आंदोलन का स्वरूप मध्यम वर्गीय दिखाई देता है ।
- दूसरी तरफ सुधारकों ने समाज में अंधविश्वास वर्ण व्यवस्था छुआछूत की भावना और धार्मिक आडम्बरों पर चोट किया

तथा मानव की क्षमता पर बल दिया फलक में मानव की एकता का मार्ग प्रशस्त हुआ शिक्षा पर बल देने से जागरूकता बढ़ी जो राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हुई इस दृष्टि से यह आंदोलन लोकप्रिय स्वरूप से मुक्त हो जाता है।

3. शैक्षणिक स्वरूप

- यह आंदोलन शैक्षणिक स्वरूप से मुक्त था प्राय सभी सुधारकों ने शिक्षा पर बल दिया इसी क्रम में **राजा राममोहन राय ने कोलकाता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की तो आर्य समाज ने डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना की तो सैयद अहमद खां ने अलीगढ़ में मुस्लिम कॉलेज की स्थापना की** इतना ही नहीं सुधारकों ने महिला शिक्षा पर बल दिया ।
- विभिन्न पुस्तकों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जो आंदोलन के शैक्षिक स्वरूप को उजागर करता है ।

4. नारीमुक्ति का स्वरूप

- 19 वीं सदी के सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के केन्द्र में नारी मुक्ति का चिंतन दिखाई देता है वस्तुतः अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे विधवा विवाह बाल विवाह सती प्रथा देवदासी प्रथा पर्दा प्रथा आदि नारी से संबंधित हैं अर्थात् यह नारी अधिकारों को सीमित करती थी ।
- अतः सुधारकों ने इन कुरीतियों पर चोट कर नारी मुक्ति का प्रयास किया इसी क्रम में **सुधारकों के प्रयास से सती प्रथा निरोधक कानून बाल हत्या निरोधक कानून विधवा पुनर्विवाह अधिनियम आदि का निर्माण हुआ ।**
- साथ ही सुधारकों ने नारी शिक्षा पर बल देकर उसे जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया इस दृष्टि से यह आंदोलन नारी मुक्ति स्वरूप से मुक्त दिखाई देता है ।

5. सुधारवादी स्वरूप

- यह आंदोलन क्रांतिकारी नहीं सुधारवादी स्वरूप लिए हुए था वस्तुतः सुधारकों ने सामाजिक धार्मिक बुराइयों को दूर करने के क्रम में अपने धर्म के आडम्बरों पर चोट की किन्तु उन्होंने कहीं भी अपने धर्म को छोड़ने या नया धर्म चलाने की बात नहीं की राजा राममोहन राय हो या सैयद अहमद खान सभी ने अपने धर्म में रहते हुए सुधारों की बात की।

6. मध्यकालीन भारतीय धर्म सुधार आंदोलन से भिन्न स्वरूप

19वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन 15 वीं सदी- 16 सदी के मध्य कालीन कवि नानक जैसे लोगों द्वारा चलाए जा रहे सुधार आंदोलन इस रूप से भिन्न है कि उन्नीसवीं सदी में कानून निर्माण द्वारा सुधारों पर बल दिया गया और इन सुधारों में पश्चिमी प्रेरणा भी शामिल थी साथ ही सुधारकों ने शिक्षण संस्थानों की स्थापना की ।

7. भारतीय पुनर्जागरण के रूप में

- 19 वीं सदी का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन अपनी कुछ विशेषताओं के आधार पर यूरोपीय पुनर्जागरण के समान दिखाई देता है वस्तुतः भारतीय पुनर्जागरण में मानवतावाद तर्क व विवेक पर बल दिया गया है तथा कर्मकांड की आलोचना की गई ।
- इसी तरह भारत में भी समाज सुधारकों ने मानवतावाद पर बल देते हुए कर्मकांड की आलोचना की । अक्षय कुमार दत्त ने चिकित्सा विज्ञान के तर्क के आधार पर बाल विभाग को एक समस्या बताया तो साथ ही सुधारकों ने आधुनिक शिक्षा पर बल देते हुए शिक्षा केंद्रों की स्थापना की इस दृष्टि से सुधार आंदोलन को भारतीय पुनर्जागरण के रूप में देखा जा सकता है।
- किन्तु यूरोपीय पुनर्जागरण के कई तत्व भौगोलिक खोज वैज्ञानिक आविष्कार कला के क्षेत्र में विशेष प्रगति भारतीय सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन में दिखाई नहीं देती इस आधार पर आंदोलन को पूर्णता यूरोपीय पुनर्जागरण के समान नहीं कहा जा सकता।

<u>योगदान</u>

1. भारतीयों में आत्मविश्वास व आत्म सम्मान की भावना जागृत हुई वस्तुतः सुधार आंदोलन ने लोगों में स्वतंत्रता समानता की भावना जागृत हुई ।
2. सुधार आंदोलन ने भारतीयों को उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराया जिससे उनमें हीनता की भावना कम हुई।
3. आंदोलन में आधुनिक शिक्षा पर बल दिया और सुधारकों ने पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जिससे लोगों के विचार एक दूसरे तक पहुँच सके साथ ही विभिन्न शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई जिससे समाज में जागरूकता बढ़ी और राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
4. सुधार आंदोलन ने स्वराज्य से देशी की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया इसी क्रम में आर्य समाज ने भारत भारतीयों के लिए नारा दिया फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ
5. कर्मकांड और आडम्बर पर चोट करने से धर्म का सरलीकरण हुआ जाति बंधन कमजोर हुआ अंधविश्वास पर चोट हुई इससे मानव की एकता को बढ़ावा मिला फलतः राष्ट्रीय चेतना का आधार निर्मित हुआ।
6. नारी मुक्ति के क्षेत्र में आंदोलन का प्रयास सराहनीय रहा सुधारकों के प्रयासों से सामाजिक कुरीतियों को रोकने के लिए अनेक कानून बने।

<u>सीमाएं</u>

- आंदोलन का प्रसार नगरी क्षेत्रों तक सीमित रहा और यह मध्यमवर्गीय स्वरूप से मुक्त था।
- अतीत पर अत्यधिक बल देने से तार के दृष्टिकोण को चोट पहुँची वस्तुतः भारत का गुणगान करते हुए हिन्दू धर्म सुधारकों ने उसे प्राचीन काल तक सीमित रखा तो साथ ही मध्यकाल जो कि मुस्लिम शासक वर्ग से मुक्त था पतन के रूप में देखा इससे साम्प्रदायिकता बढ़ी ।
- इन सुधारकों के प्रयासों के बावजूद समाज में वर्ण व्यवस्था जनित भेदभाव अस्पृश्यता लैंगिक भेद बाल विवाह जैसी कुरीतियां मौजूद रहे।

अध्याय – 7

स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन

❖ **1945 -1947 के बीच का भारत :**

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा – नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा – 20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना – 3 जून 1947

☞ **वैवेल योजना (1945) –**

- वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।
- **इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।**
- ब्रिटिश सरकार इन राजनीतिक सुधारों के लिए इसलिए उत्साहित थी कि 1945 में इंग्लैण्ड में चुनाव होने वाले थे और वहाँ की सरकार यह प्रदर्शित करना चाहती थी कि वह भारत में समस्या समाधान के प्रति गंभीर है।

वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए:

1. वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।
2. वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।

- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों- मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस ने जिन्ना के मत को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA):-

- **INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।** जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था। उन्होंने मोहन सिंह से कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर कार्य करें ।
- वस्तुतः मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे और जब ब्रिटिश सेना दक्षिण पूर्व एशिया से पीछे रह रही थी तो मोहन सिंह जापानियों के साथ हो गए। इसी क्रम में। सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- **INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया ।** यहाँ क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने उन्हें सहयोग दिया। अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्टूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया। इसका मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून(म्यांमार) में भी बनाया गया ।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गाँधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया तो **महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया ।**
- 6 जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस ने एक रेडियो संदेश में कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध शुरू हो चुका हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।
- शहनवाज खान के नेतृत्व में INA की सैन्य टुकड़ी जापानियों के साथ मिलकर भारत - बर्मा सीमा पर हमला करने के लिए इंफाल भेजी गयी किंतु जब जापानियों की विश्व युद्ध में पराजय होने लगी तब उनके साथ-साथ आजाद हिंद फौज के सैनिकों को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और उन पर मुकदमा चला।

☞ **लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945):**

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया। फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- नेहरू ने सरकार से इन गुमराह देश भक्तों के प्रति उदारता दिखाने की अपील की। इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे। नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे - कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था। मुकदमे के दौरान जनता ने सक्रिय भूमिका निभायी देश भर में हड़ताल और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। समाचार पत्रों में लेख लिखे गए।
- आजाद हिंद सप्ताह (11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा **12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।**

- इसी तरह ***अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।*** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के कैरन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

  <u>शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946)</u> - बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण जहाज 'तलवार पर नाविकों ने ब्रिटिश नस्लवादी व्यवहार एवं सुविधाओं में कमी के मुद्दे पर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। इसी क्रम में नाविक पी.सी दत्त ने'तलवार' की दीवारों पर अंग्रेजों भारत छोड़ों लिख दिया।
- फलतः उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में द शाही नौसेना के नाविकों ने सरकार से उन्हें रिहा करने की मांग की तो साथ ही आजाद हिंद फौज के बंदियों की रिहाई एवं इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों के वापसी की मांग की शीघ्र ही यह विद्रोह अन्य जहाजों पर भी फैल गया और नाविकों ने सरकारी आदेश को मानने से इंकार कर दिया। यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की याद ताजा करता है।
- वस्तुतः 1857 का विद्रोह भी नागरिक असंतोष को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत सैन्य छावनी से सैनिक असंतोष के रूप में हुई थी और इसमें सैनिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में असैनिक भी सम्मिलित राष्ट्रीय चेतना से मुक्त न होते हुए भी यह विद्रोह राष्ट्रीय चेतना के विकास में अपनी भूमिका निभाता है। इस दृष्टि से इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कोर्ट में रखा जाता है।
- इस विद्रोह के पश्चात् भारत से कम्पनी शासन की समाप्ति कर दी गयी और भारत में क्राउन का शासन स्थापित हुआ। अब सरकार ने अपनी नीतियों में परिवर्तन करते हुए विलय और विस्तार की नीति त्याग दिया । इस तरह सरकार की नीतियों में परिवर्तन के लिए 1857 का विद्रोह ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ।
- इसी तरह, शाही भारतीय नौसैनिक विद्रोह भी जन असंतोष की अभिव्यक्ति था। नस्लवादी व्यवहार एवं निम्न स्तर की सुविधाएँ इस विद्रोह का तात्कालिक कारण था । सैनिकों से शुरू हुए इस विद्रोह में जगह-जगह असैनिक समूह भी सरकार विरोधी कार्यक्रम में शामिल होते गए।
- यह विद्रोह राष्ट्रवाद की परिपक्व अवस्था को सूचित करता है। इस विद्रोह के उपरांत सरकार ने कैबिनेट मिशन माध्यम से भारतीयों द्वारा निर्मित एक संविधान सभा और अंतरिम सरकार के गठन की घोषणा की। तत्पश्चात् भारत की आजादी सामने आयी।
- इस तरह, यह विद्रोह ब्रिटिश शासन की समाप्ति अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ताबूत में अंतिम कील साबित हुआ जिसमें प्रथम कील 1857 के विद्रोह ने लगायी थी।
- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस.खान थे। नाविकों ने अपने जहाज पर कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी के झंडे लगाए जो इस बात का संकेत है कि विद्रोह दल और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर कार्य कर रहे थे। इन विद्रोहियों ने राजनीतिक कैदियों के रिहाई की मांग की।
- ***विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा (महाराष्ट्र), कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला । यहाँ मौजूद रक्षा संस्थानों में कर्मचारियों ने हड़ताल की । अंततः जिन्ना एवं पटेल के प्रयासों से नाविकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। पटेल ने लिखा कि ब्रिटिश सैन्य ताकतें इतने जबरदस्त तरीके से जुटी है कि वे विद्रोहियों को पूर्णतः नष्ट कर सकती।***
- इस विद्रोह के दौरान आम जनता ने विद्रोहियों के पक्ष में एकजुटता प्रदर्शित की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की इतिहास की पुस्तक में इस विद्रोह का उल्लेख चाहे ना मिलता हो किंतु इसकी भूमिका भारतीय जनमानस पर अंकित है।
- केन्द्रीय नौसेना हड़ताल समिति ने अपने अंतिम संदेश में कहा कि "हमारी हड़ताल हमारे राष्ट्र के जीवन की ऐतिहासिक घटना है। पहली बार सेना के जवानों एवं आम आदमी का खून एक साथ और एक लक्ष्य के लिए सड़कों पर बह रहा है। हम फौजी इसे कभी नहीं भूलेंगे। हमारी महान जनता जिंदाबाद।

  <u>नौसेना विद्रोह का प्रभाव</u> : इस विद्रोह द्वारा जनता की निडरता एवं संघर्ष क्षमता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई। विद्रोहियों को भारतीयों ने ब्रिटिश शासन की पूर्ण समाप्ति के रूप में देखा और इसे वे स्वतंत्रता दिवस की तरह मनाने लगे।
- इस विद्रोह ने ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के समक्ष झुकने के लिए विवश किया। इसी क्रम में सरकार ने घोषणा की कि INA के उन्हीं बंदियों पर मुकदमा चलेगा जिन पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है। साथ ही, इण्डोनेशिया से भारतीय सैनिकों को वापस बुलाने की घोषणा की गयी एवं भारतीय मामलों पर विचार के लिए एक उच्च स्तरीय कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया।

<u>कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)</u>

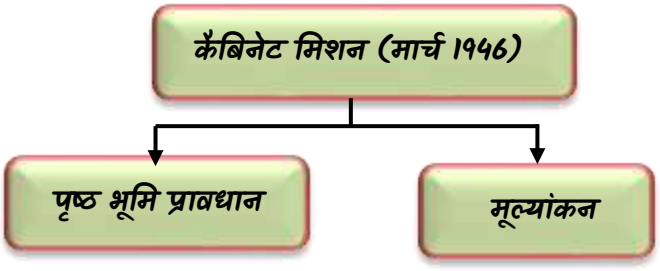

- इन क्षेत्रों में महिलाओं की कम संख्या के लिये न केवल सामाजिक मानदंड बल्कि गुणवत्ताहीन शिक्षा भी ज़िम्मेदार हैं।
- **महिलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु शुरू की गई पहल**
- देश में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) के क्षेत्रों में महिलाओं को करियर बनाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिये विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा 2019 से 'विज्ञान ज्योति योजना' चलाई जा रही है।
- इसके साथ ही, महिला वैज्ञानिकों को शैक्षणिक और प्रशासनिक स्तर पर अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से साल 2014-15 में 'किरण योजना' की शुरुआत की गई।
- स्टेम (STEM) के क्षेत्र में लैंगिक समानता का आकलन करने के लिये 'जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस (GATI)' कार्यक्रम शुरू किया गया।
- कुल मिलाकर यह कहना गलत नहीं होगा कि समय के साथ-साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं ने मेहनत और लगन से अपनी एक अलग पहचान बनाई है; उनके आविष्कारों व प्रयोगों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में चार चांद लगाए हैं लेकिन सरपट भाग रही इस विज्ञान की दुनिया में उनकी रफ्तार का पहिया अभी धीमा है। इसलिए यथास्थिति में तेजी से बदलाव लाने के लिये हमारे परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, कंपनियों और सरकारों, सभी को साथ मिलकर कार्य करना होगा। साथ ही, वैज्ञानिक जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली महिलाओं की सफलता की कहानियाँ जन-जन तक पहुँचानी होंगी जिससे संकीर्ण मानसिकता वाले तबके की सोच में बदलाव लाया जा सके और देश की बेटियाँ बढ़-चढ़कर विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

आधुनिक विश्व का इतिहास

अध्याय – I

पुनर्जागरण व धर्म सुधार

पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना" । चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसे ही "पुनर्जागरण" कहा जाता है ।

चौदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप में सांस्कृतिक क्षेत्र में जो आश्चर्यजनक उन्नति हुई, उसे 'पुनर्जागरण' के नाम से पुकारा जाता है।

कथन

- **पं. जवाहरलाल नेहरू** का कथन है कि, "पुनर्जागरण का अर्थ विद्या का पुनर्जन्म तथा कला, विज्ञान और साहित्य तथा यूरोपीय भाषाओं का विकास है।"
- **इतिहासकार स्वेन** का कथन है कि, "पुनर्जागरण से ऐसे सामूहिक शब्द का बोध होता है जिसमें मध्यकाल की समाप्ति तथा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश होता है।"
- **प्रो. ल्यूकस** का कथन है कि, "चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच में यूरोप में होने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"
- **इतिहासकार डेविस** के अनुसार, "पुनर्जागरण शब्द मानव के स्वतंत्रता प्रिय, साहसी विचारों को जो मध्य युग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।"
- **सीमोण्ड** के अनुसार, "पुनर्जागरण एक ऐसा आंदोलन है, जिसके फलस्वरूप पश्चिम के राष्ट्र मध्य युग से निकल कर वर्तमान युग के विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे हैं।"
- **फिशर का** कथन है कि, "सर्वप्रथम इटली ने नगरों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन कला, साहित्य का पुनः सृजन, मानववादी आंदोलन का प्रारम्भ, स्थापत्य कला एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिवादी सिद्धांतों का विकास, नवीन दृष्टिकोण, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक आलोचना, छापेखाने का आविष्कार, दर्शन शास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नया स्वरूप तथा विवेचन इत्यादि तत्त्वों तथा विशेषताओं को सामूहिक रूप से 'पुनर्जागरण' कहते हैं ।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ

1. **स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतंत्र चिंतन की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। अब मनुष्य परम्परागत विचारों और मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर कसने लगा। अब मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।
2. **व्यक्तित्व का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मनुष्य को प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक पाखण्डों से

मुक्ति मिली। इसके फलस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का स्वतंत्र रूप से विकास हुआ।

3. **मानववादी विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण ने मानववादी विचारधारा का प्रसार किया। अब मनुष्य को यह प्रेरणा मिली की उसे परलोक की चिन्ता छोड़कर इस जीवन को आनन्द से बिताना चाहिए। धर्म एवं मोक्ष के स्थान पर मानव-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना चाहिए।
4. **देशी भाषाओं का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं का अत्यधिक विकास हुआ। अब जन-साधारण की भाषाओं में ग्रंथ लिखे गए जिसके फलस्वरूप देशी भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ।
5. **चित्रकला के क्षेत्र में उन्नति-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई।
6. **वैज्ञानिक विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक विचारधारा का भी विकास हुआ। अब सभी विषयों को तर्क एवं विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा।

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. **धर्म-युद्ध-**

- धर्मयुद्ध (क्रूसेड)- ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान जेरूसलम के अधिकार को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों (सेल्जुक तुर्क) के बीच लड़े गये युद्ध इतिहास में 'धर्मयुद्धों के नाम से विख्यात हैं। ये युद्ध लगभग दो सदियों तक चलते रहे। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासी पूर्वी रोमन साम्राज्य (जो इन दिनों में बाइजेंटाइन साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था) तथा पूर्वी देशों के संपर्क में आये।
- इस समय में जहाँ यूरोप अज्ञान एवं अन्धकार में डूबा हुआ था, पूर्वी देश ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे।
- पूर्वी देशों में अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यताओं के संपर्क से अपनी एक नई समृद्ध सभ्यता का विकास कर लिया था। इस नवीन सभ्यता के संपर्क में आने पर यूरोपवासियों ने अनेक वस्तुएं देखी तथा उन्हें बनाने की पद्धति भी सीखी।
- इससे पहले वे लोग अरबों से कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज और छापाखाने की जानकारी प्राप्त कर चुके थे।
- इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की तर्क-शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें प्राचीन यूनानी तथा रोमन विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उन लोगों के ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। यूरोप के अनेक साहसी लोगों ने पूर्वी देशों की यात्राएँ की तथा अपनी यात्राओं के विवरण लिखे, जिन्हें पढ़ने से यूरोपवासियों के संकीर्ण विचार समाप्त हुए तथा उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों को नवीन मार्गों की जानकारी मिली और यूरोप के कई साहसिक लोग पूर्वी देशों की यात्रा के लिए चल पड़े। उनमें से कुछ ने पूर्वी देशों की यात्राओं के दिलचस्प वर्णन लिखे, जिन्हें पढ़कर यूरोपवासियों की कूप-मंडूकता दूर हुई।
- मध्ययुग में लोग अपने सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने लगे थे। परन्तु जब धर्मयुद्धों में पोप की सम्पूर्ण शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के बाद भी ईसाइयों की पराजय हुई तो लाखों लोगों की धार्मिक आस्था डगमगा गई और वे सोचने लगे की पोप भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य मात्र है।

2. **पूर्व से संपर्क-**

- पूर्वी देशों के संपर्क में आने से यूरोपवासी अत्यधिक प्रभावित हुए। अरब लोग स्वतंत्र रूप से चिंतन करते थे। उन्हें अरस्तू, प्लेटो आदि की पुस्तकों का भी ज्ञान था। इस प्रकार अरब लोगों ने यूरोपियनों का ध्यान यूनानी दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदि की ओर आकर्षित किया । यूरोपियन लोगों ने अरबों तथा चीन से कुतुबनुमा, बारूद, कागज, छापेखाने आदि की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार पूर्वी देशों के संपर्क में आने से यूरोपवासियों में स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की भावनाएँ उत्पन्न हुई।

3. **मंगोलों का योगदान-**

- 13वीं शताब्दी में मंगोल नेता कुबलई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया। कुबलई खाँ ने अपने दरबार में अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, धर्म प्रचारकों, राजदूतों आदि को संरक्षण दे रखा था। इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो भी उसके दरबार में पहुँचा था। चीन से लौटकर उसने अपनी यात्रा का रोचक वर्णन लिखा। इस वर्णन से यूरोपवासियों को नये-नये देशों की खोज करने तथा अपनी संस्कृति को विकसित करने की प्रेरणा मिली।
- प्रसिद्ध यात्री कोलम्बस भी कुबलई खाँ के दरबार में पहुँचा। उसने कुबलई खाँ से प्रभावित होकर समुद्री यात्रा के लिए प्रस्थान किया। अरबों तथा मंगोलों के संपर्क से यूरोपवासियों को छापाखाना, कुतुबनुमा, बारूद, कागज आदि की जानकारी हुई। इन चीजों की जानकारी ने यूरोपवासियों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।
- यूरोप के बहुत से देशों विशेषकर स्पेन, सिसली और सार्डिनिया में अरबों के बस जाने से पूर्व यूरोपवासियों को बहुत सी बातें सीखने को मिली। अरब लोग स्वतंत्र चिंतन के समर्थक थे और उन्हें यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिकों प्लेटो तथा अरस्तु की रचनाओं से विशेष लगाव था।
- ये दोनों विद्वान् स्वतंत्र विचारक थे और उनकी रचनाओं में धर्म का कोई संबंध न होता था। अरबों के संपर्क से यूरोपवासियों का ध्यान भी प्लेटो तथा अरस्तु की ओर आकर्षित हुआ। तेरहवीं सदी के मध्य में कुबलाई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया और उसने अपने ही तरीके से यूरोप और एशिया को एक-दूसरे से परिचित कराने का प्रयास किया। उसके दरबार में जहाँ पोप के दूत तथा यूरोपीय देशों के व्यापारी एवं दस्तकार रहते थे, वहीं भारत तथा अन्य एशियाई देशों के विद्वान् भी रहते थे।

- **वैटिकन सिटी:** इस संधि के तहत **वैटिकन सिटी को एक स्वतंत्र और संप्रभु राज्य** के रूप में मान्यता दी गई।
- **कैथोलिक धर्म को मान्यता:** रोमन कैथोलिक धर्म को इटली का राजधर्म घोषित किया गया और स्कूलों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। इसके बदले में पोप ने रोम को इटली की राजधानी के रूप में मान्यता दी।

▪ **फासीवादी विदेश नीति**

- **रोमन साम्राज्य का पुनर्जीवन:** मुसोलिनी का मुख्य लक्ष्य इटली की खोई हुई गरिमा लौटाना और उसे प्राचीन रोमन साम्राज्य की तरह शक्तिशाली बनाना था।
- **इथियोपिया पर आक्रमण (1935):** 1896 की अडोवा की हार का बदला लेने के लिए मुसोलिनी ने इथियोपिया पर आक्रमण किया और उसे इटली के साम्राज्य में मिला लिया।
- **अल्बानिया और स्पेन:** 1939 में अल्बानिया पर कब्जा किया गया। स्पेन के गृहयुद्ध में मुसोलिनी ने जनरल फ्रैंको की सहायता की ताकि वहाँ भी फासीवादी विचारधारा वाली सरकार स्थापित हो सके।
- **रोम-बर्लिन धुरी (Rome-Berlin Axis):** 1936 में जर्मनी के साथ गठबंधन हुआ, जो बाद में 'इस्पात समझौते' (Steel Pact) में बदल गया।

▪ **द्वितीय विश्व युद्ध और पतन**

- **युद्ध में प्रवेश:** मुसोलिनी ने जून 1940 में हिटलर के समर्थन में फ्रांस और ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।
- **सैन्य विफलताएँ:** ग्रीस और उत्तरी अफ्रीका के अभियानों में इटली की सेना बुरी तरह विफल रही, जिससे मुसोलिनी की लोकप्रियता तेजी से गिरी।
- **सत्ता से निष्कासन:** जुलाई 1943 में मित्र देशों द्वारा सिसली पर आक्रमण के बाद, **फासीवादी ग्रैंड काउंसिल** और राजा ने मुसोलिनी को प्रधानमंत्री पद से हटाकर बंदी बना लिया।
- **अंत:** हालांकि जर्मनी ने उन्हें छुड़ाकर उत्तरी इटली में एक कठपुतली सरकार का प्रमुख बनाया, लेकिन अंततः अप्रैल 1945 में भागने की कोशिश के दौरान उन्हें इतालवी पक्षपातियों (Partisans) ने पकड़कर मार दिया। उनके शव को मिलान के एक चौक पर उल्टा लटका दिया गया, जो इटली में फासीवाद के हिंसक अंत का प्रतीक बना।

अध्याय – 4

विश्व युद्धों का प्रभाव

प्रथम महान युद्ध

प्रथम महान युद्ध के प्रारं होने के कारण

1. **गुप्त संधियाँ** - यद्यपि जर्मनी , रूस और ऑस्ट्रिया में परस्पर संधि हो चुकी थी , किंतु जर्मनी को रूस पर किन्हीं कारणों से विश्वास नहीं हो सकता था । उसने 1871 में ऑस्ट्रिया से एक गुप्त संधि कर ली । 1882 में इटली ने भी जर्मनी एवं ऑस्ट्रिया से संधि कर ली और इस प्रकार ' त्रिराष्ट्रीय गुट ' का जन्म हुआ । बिस्मार्क ने अपनी कूटनीति से रूस और फ्रांस में वैमनस्य बनाये रखा , किंतु 1890 में उसके पतन के साथ रूस और फ्रांस एक - दूसरे के निकट आ गये और 1894 में उनका परस्पर समझौता हो गया । इसी समय इंग्लैण्ड भी अपने एकान्तवास की नीति का त्याग कर जर्मनी का अनुसरण करने लगा । उसने भी अन्य राज्यों से समझौता करके अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया । जब उसका जर्मनी से समझौता आसान न रह गया, तो उसने 1902 में जापान से, 1904 में फ्रांस से और 1907 में रूस से संधि कर ली और इस प्रकार ' त्रिराष्ट्रमैत्री संघ ' का निर्माण हो गया । इन गुटबंदियों के फलस्वरूप यूरोप का दो गुटों में विभाजन हो गया जो एक - दूसरे के घोर शत्रु थे । इन दोनों गुटों के कारण प्रथम महान युद्ध आवश्यक हो गया ।

- प्रो . फे का कथन है कि , " युद्ध का सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर्निहित कारण गुप्त संधियों की प्रणाली थी जिसका विकास फ्रांस और प्रशा के युद्ध के बाद हुआ था । इसने धीरे - धीरे यूरोप की शक्तियों को ऐसे दो विरोधी गुटों में बांट दिया जिनमें एक दूसरे के प्रति सन्देह बढ़ता रहा और जो अपनी सेना एवं नौसेना की शक्ति बढ़ाते रहे । "

2. **उपनिवेशवाद** -यूरोप का प्रत्येक देश विदेशों में अपने उपनिवेश स्थापित करना चाहता था, जिससे अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता का आविर्भाव हुआ । जर्मनी और इंग्लैण्ड में यह प्रतिद्वन्द्विता अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई । वे विश्व के प्रत्येक कोनों में बाजारों को स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे । वे एक - दूसरे के विरोधी बनते जा रहे थे । वे अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या को बसाने के लिए उपनिवेशों की खोज में थे । यूरोप में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हो चुका था । सभी देशों में उद्योगों का विकास हो रहा था । तैयार माल की खपत के लिए भी उपनिवेशों की आवश्यकता थी । इंग्लैण्ड एवं जर्मनी उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक संघर्ष कर रहे थे । इस दिशा में फ्रांस , इटली , रूस आदि देश भी प्रयत्नशील थे । अतः उपनिवेश के प्रश्नों को लेकर विरोधी गुटों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी ।

3. **सैनिकवाद** - सन् 1871 - 1914 का काल यूरोप में घोर सैनिकवाद के विकास का काल था । अत : यह काल

इतिहास में सशस्त्र क्रांति का युग कहा जाता है । इस समय दोनों गुटों में अपनी सेना एवं नौसेना बढ़ाने की दौड़ हो रही थी । प्रत्येक राष्ट्र अपने देश में युद्ध की अनिवार्यता एवं लाभों का प्रचार कर रहा था । जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर इंग्लैण्ड ने यह निश्चय कर लिया था कि यदि जर्मनी एक जहाज बनाता है तो वह छः जहाज बनाएगा । विलियम द्वितीय ने घोषित किया था कि जर्मनी का भविष्य समुद्र पर निर्भर करता है । उसने अपनी सेना के सम्मुख अनेक बार उत्तेजनात्मक भाषण दिये । इससे अन्य देशों में बहुत चिंता उत्पन्न हो गई । 1904 के बाद नौसेना के निर्माण की प्रतिद्वन्द्विता का कारण ही इंग्लैण्ड तथा जर्मनी के बीच कटुता बढ़ने लगी । जर्मनी के पास 8,50, 000 सैनिक थे । रूस के पास भी शांति काल में 15 लाख सैनिक थे । उन देशों ने भी सैनिक संगठन पर जोर देना आरंभ कर दिया । प्रत्येक देश में संगठित वर्ग का विकास हो गया । प्रत्येक देश में नौसेना का प्रभाव बढ़ गया । इस प्रकार सैनिकवाद का वह दौड़ पर्याप्त सीमा तक प्रथम महान युद्ध के लिए अनिवार्य बन चुकी थी ।

4. **जनमत की अवहेलना** - जनता में अत्यधिक असंतोष व्याप्त हो रहा था । यूरोप के राज्यों में अधिकारी वर्ग ही शासन कार्यों को करता था । यही नहीं , व्यवस्थापक विभाग के अनेक कार्यों के बारे में जनता कोई जानकारी ही नहीं रख पाती थी । मंत्रिमंडल को बिना बताएँ हुए गुप्त संधिया कर ली जाती थी । जनवरी , 1906 में इंग्लैण्ड के सर एडवर्ड ग्रे ने फ्रांस के साथ संधि की बातचीत की जो कि पूर्णतः गुप्त रही, जिसका पता संसद को भी 1912 तक न लग सका । सम्राट एवं विदेश मंत्री ही संधियां कर लिया करते थे । इसलिए जनता अपनी सरकार के प्रति विश्वास नहीं रखती थी । जनता की इच्छा कभी युद्ध करने की नहीं होती थी । वह शांति चाहते थे, लेकिन सम्राटों को साम्राज्य एवं रक्त की पिपासा होती है । जनमत के विचारों के विरोध से भी युद्ध की आशंकाएं समाप्त न हो सकी । इस कारण युद्ध होना अनिवार्य हो गया था ।

5. **कूटनीतिक कारण** - कूटनीति के दाव - पेचों ने भी अंतर्राष्ट्रीय तनाव को बढ़ाया था । बिस्मार्क ने जर्मनी में त्रिगुट की स्थापना की जिसके प्रत्युत्तर स्वरूप ' त्रिराष्ट्रमैत्री संघ ' का जन्म हुआ और उनमें परस्पर कभी बाल्कन प्रायद्वीप को लेकर तथा कभी मोरक्को की समस्या को लेकर तनाव बढ़ता ही गया । यद्यपि कूटनीति प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का कारण न बन सकी , फिर भी युद्ध की परिस्थितियों को जन्म देने में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा । उसने यूरोप के समस्त देशों को संधियों के एक ऐसे जाल में बांध कर रखा था कि एक युद्ध करता , तो दूसरों को स्वतः ही उसमें सम्मिलित हो जाना पड़ता था । गुटबंदियों से पूर्व बड़े - बड़े राष्ट्र सम्मेलनों के द्वारा प्रारंभिक झगड़ों को निपटा लेते थे , किन्तु अपनी ही प्रतिष्ठा को सर्वोपरि समझने वाले तथा औचित्य की भावना से हीन गुटों के निर्माण ने इस कार्य को असंभव बना दिया ।

6. **फ्रांस की प्रतिशोध की भावना** - जर्मनी ने 1871 ई . में फ्रांस के अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था । उस समय एक बड़ी हर्जाने की रकम को न देने की अवधि तक अपने व्यय पर जर्मन सेना रखने की शर्ते भी लादी गयी थी । नेपोलियन महान के राष्ट्र का अतीव अपमान किया गया था । फ्रांस को टुकड़ों में विभाजित कर दिया था । अल्सेस एवं लॉरेन उसके दो बच्चों के समान थे, जो माता की गोद में जाने के लिए तड़प रहे थे और माता उनको वक्षस्थल से चिपकाने को तरस रही थी । फ्रांस किसी भी प्रकार अपने अपमान का जर्मनी से प्रतिशोध लेना चाहता था, लेकिन जर्मनी उसे अब तक कुचल रहा था । फ्रांस भी किसी अच्छे अवसर की खोज में था । मोरक्को में भी जर्मनी ने फ्रांस का विरोध किया था , अतः फ्रांस में भी राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने के विभिन्न उपाय क्रियान्वित किये जाने लगे । इस सबका प्रथम कारण फ्रांस का एकाकी होना था । फ्रांस ने भी मित्रों की खोज करनी प्रारंभ कर दी और उसे शीघ्र ही रूस एवं इंग्लैण्ड मित्र के रूप में मिल गये । जर्मनी की कूटनीति ने फ्रांस के स्वाभियोग को जगा दिया।

7. **राष्ट्रीयता की भावना** - यूरोपीय देश और विशेषकर फ्रांस में समय समय पर हुई क्रांतियों के परिणामस्वरूप देशों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार होने लगा । इन सब देशों में राष्ट्रीय एवं लोकसत्तावाद की भावनाएं स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगी । यूरोप में नवीन एवं प्राचीन प्रवृत्तियां तथा विचारधाराओं में संघर्ष आरंभ हो गया । रूस , जर्मनी और ऑस्ट्रिया आदि में तो वर्तमान शताब्दी के आरंभिक वर्षों तक राजतंत्रीय शासन व्यवस्था स्थापित थी । इन सभी देशों में अनेक जातियों का निवास था और ये सभी जातियाँ अपनी राष्ट्रीयता के लिए निरन्तर संघर्ष करती थी । इतिहासकार सत्यकेतु विद्यालंकार का कथन है , " 1914 - 1918 का महान युद्ध नवीन और प्राचीन प्रवृत्तियों के संघर्ष का ही परिणाम था । उसके कारण नई प्रवृत्तियों की पुराने जमाने पर भारी विजय हुई । यही कारण है कि इस महान युद्ध के बाद जर्मनी और ऑस्ट्रिया आदि विविध राज्यों के वंशाक्रमानुगत राजाओं के शासन का अन्त हो गया और इन सब में लोकतंत्र , गणतन्त्रात्मक राज्यों की स्थापना हो गई । "

8. **आर्थिक साम्राज्यवाद** - प्रथम विश्व युद्ध का एक अन्य मुख्य कारण आर्थिक साम्राज्यवाद था । औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप देशों के उत्पादन में वृद्धि होने लगी थी । परिणामस्वरूप इन देशों से कच्चा माल लाने और अपने यहां के निर्मित माल को बेचने के लिए बाजारों की आवश्यकता अनुभव होने लगी । ऐसा तभी हो सकता था जब उन देशों पर उनका एकाधिकार हो जाए । इसके अतिरिक्त इन देशों पर किसी न किसी प्रकार का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित हुआ जिसके कारण सभी उन्नत राष्ट्र अपने लिए सुरक्षित राज्यों की व्यवस्था करने लगे और इस प्रकार साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का उदय हुआ । इस प्रकार जब विभिन्न राष्ट्रों ने उपनिवेशों की खोज करनी प्रारंभ कर

दी तो उनमें आपस में संघर्ष होना स्वाभाविक था । यही कारण है कि आर्थिक हितों से टकराने से युद्ध की संभावनाओं में और भी वृद्धि हो गई ।

९. **अंतर्राष्ट्रीय संगठन का अभाव** - स्पष्ट है कि यूरोपीय राष्ट्र युद्ध के लिए पूर्णरूप से तैयार थे । इन परिस्थितियों एवं वातावरण में उनको कोई युद्ध से रोक सकता था तो वह केवल एक ऐसी संस्था हो सकती थी , जो युद्ध करने वाले राष्ट्रों के मध्य मध्यस्थता करके उनके झगड़ों का शांतिपूर्वक निपटारा कर सकती । इस प्रकार अब राष्ट्रों ने अनुभव करना आरंभ कर दिया कि अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की जाए जो निष्पक्ष रूप से उनके झगड़ों को समाप्त करा दे । इसी उद्देश्य से रूस के जार ने हेग में सन् १८९८ ई . में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया । जनता को इस सम्मेलन से बड़ी - बड़ी आशाएं थी , परन्तु किन्हीं विशेष कारणों से यह सम्मेलन असफल रहा । १९०७ ई . में एक अन्य सम्मेलन का आयोजन किया गया और अनेक अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का निर्माण किया गया परन्तु उन्हें लागू करने का कभी प्रयत्न नहीं किया गया । अत : अंतर्राष्ट्रीय संस्था के अभाव में किसी भी देश पर कोई अंकुश नहीं था और सभी देश अपनी इच्छानुसार उचित या अनुचित कार्य करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र थे ।

१०. **विलियम द्वितीय की अयोग्यता** - जर्मनी का सम्राट विलियम द्वितीय एक अयोग्य शासक था । वह किसी देश से अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्थापित करने को तैयार ही नहीं होता था । अपनी महत्वाकांक्षी से वह सदा गर्व से अंधा रहता था । वह जर्मनी को विश्व का सबसे शक्तिशाली देश बनाने के लिए प्रयत्नशील था । उसने समुद्रिक शक्ति का विकास इंग्लैण्ड से भी बढ़कर करना चाहा । इंग्लैण्ड अपनी नाविक शक्ति को सर्वश्रेष्ठ रखना चाहता था । फिर भी उसने जर्मनी से संधि करने का प्रस्ताव किया, लेकिन अपनी अयोग्यता एवं अदूरदर्शिता से अनुप्राणित होकर उसने इंग्लैण्ड को असंतोषप्रद उत्तर दिया एवं ऑस्ट्रिया के पक्ष में अपनी सहमति प्रकट की । विलियम द्वितीय चाहता था कि इंग्लैण्ड बिना किसी शर्त के उनकी मांगों को स्वीकार कर ले । वह इंग्लैण्ड की शक्ति को समझ नहीं सका । यदि वह उससे संधि कर लेता तो घटनाओं में परिवर्तन होता , लेकिन वह अपने गर्व और अभिमान में चूर था । उसकी अदूरदर्शितापूर्ण नीति के कारण प्रथम महान युद्ध का जन्म हुआ ।

११. **पूर्वी समस्या** - बाल्कन प्रायद्वीप की समस्या भी इस युद्ध का एक उल्लेखनीय कारण थी । तुर्की की शासकीय त्रुटियों ने इस क्षेत्र के निवासियों को असंतुष्ट कर दिया था । ग्रीस, सर्बिया तथा बुल्गारिया भी मैसीडोनिया के अधिकार के प्रश्न पर एकमत नहीं थे । रूस पूर्व की ओर रुचि रखता था और वह बाल्कन की समस्या में हस्तक्षेप करना चाहता था । उसने १९०८ में बोस्निया की समस्या में सर्बिया को पक्ष ग्रहण किया । अतः अन्य राष्ट्रों में परस्पर तनाव उत्पन्न हो गया था, जो कि महान युद्ध का कारण बन गया ।

१२. **इटली की आकांक्षाएं** - इटली ऑस्ट्रिया हंगरी के अधिकृत ट्रीस्ट के बन्दरगाह के समीपवर्ती क्षेत्र पर अधिकार करने का इच्छुक था, क्योंकि इस क्षेत्र में इटालियन निवास करते थे। इटली की जनता भी इन प्रदेशों को अपने देश में सम्मिलित देखना चाहती थी । वे अपने देशवासियों से संपर्क स्थापित करने के अत्यधिक इच्छुक थे । इटली की जनता ने इसके लिए आंदोलन का प्रारंभ कर दिया । इस प्रकार यूरोप में युद्ध के बादल सघन होते गये ।

१३. **जर्मनी द्वारा परशियन नीति का अनुसरण** - परशियन नीति के अनुसार आध्यात्मिक विकास की अपेक्षा युद्ध में प्राप्त विजय का अत्यधिक महत्व था । उनकी दृष्टि में विजेता कभी भूल नहीं करता । वे इसे वहाँ के निवासियों की देशोन्नति का साधन समझते हैं । उनका विश्वास था कि युद्ध का परिणाम सर्वश्रेष्ठ होता हैं । जर्मनी का कथन था कि रक्त रंजित विजय के उपरांत विश्व को जर्मनी के सिद्धांत से ही सुख और शांति मिलेगी । वे अपनी संस्कृति को ही विश्व के हितार्थ समझते थे । वे अपनी संस्कृति का विस्तार समस्त यूरोप में करना चाहते थे । उनकी इन्हीं धारणाओं ने इन्हें यूरोप के अनेक देशों - इंग्लैण्ड , फ्रांस आदि से मिलने नहीं दिया , फलतः युद्ध होना अवश्यम्भावी हो गया ।

१४. **बोस्निया और हर्जेगोविना की समस्या** - १८७८ बर्लिन संधि के अनुसार बोस्निया और हर्जेगोविना का शासन प्रबंध ऑस्ट्रिया और हंगरी को प्राप्त हो गया , किन्तु संधि के अनुसार वह उनको अपने साम्राज्य में नहीं मिला सकते थे । ऑस्ट्रिया तथा हंगरी ने इस प्रबंध को अवहेलना की और १९०८ में इन प्रान्तों को अपने साम्राज्य में मिला लिया । सर्बिया भी इन प्रदेशों पर अधिकार रखना चाहता था , अतः उसने आंदोलन छेड़ दिया । बोस्निया और हर्जेगोविना भी अब स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए इच्छुक थे , उन्होंने सर्बिया से सहायता की मांग की । इसके फलस्वरूप बाल्कन युद्ध का जन्म हुआ और इसी समस्या के कारण १९१४ में प्रथम महान युद्ध का विस्फोट हो गया ।

१५. **अंतर्राष्ट्रीय संकट** - १९०५ से लेकर १९१४ तक निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय संकट उत्पन्न हुए जिन्होंने यूरोप के वातावरण को तनावपूर्ण बना दिया -

- **रूस जापान युद्ध** - १९०४ - ०५ में जापान तथा रूस के बीच युद्ध हुआ जिसमें रूस की पराजय हुई । इस पराजय के फलस्वरूप जब रूस को सुदूर - पूर्व में विस्तार करने का अवसर नहीं मिला तो उसने बाल्कन क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाना शुरू कर दिया जिससे बाल्कन क्षेत्र की स्थिति विस्फोटक हो गई । इस पराजय के बाद रूस इंग्लैण्ड से संधि करने के लिए बाध्य हुआ जिससे गुटबंदी को प्रोत्साहन मिला ।
- **मोरक्को संकट** - मोरक्को में फ्रांस के बढ़ते हुए प्रभाव से जर्मनी नाराज था। १९०५ में जर्मन सम्राट विलियम द्वितीय ने टैंजियर पहुंच कर मोरक्को की स्वतंत्रता की घोषणा की । उसने फ्रांस को अपमानित करने के लिए दो माँगे प्रस्तुत की -

1. मोरक्को की समस्या पर विचार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाए।
2. फ्रांस के विदेश मंत्री देल्कासे को उसके पद से हटाया जाये।

- फ्रांस को बाध्य होकर यह दोनों बातें स्वीकार करनी पड़ी। परन्तु जब 1906 में एल्जीसिराज सम्मेलन आयोजन किया गया, उसमें फ्रांस के हितों को मान लिया गया। यह जर्मनी की कूटनीतिक पराजय थी। इस अवसर पर इंग्लैण्ड ने फ्रांस का साथ दिया। 1911 ई. में जर्मनी ने अपना पैंथर नामक युद्धपोत को बन्दरगाह अगादिर पर भेज दिया जिससे फ्रांस तथा जर्मनी के बीच युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। परन्तु इंग्लैण्ड की चेतावनी के कारण जर्मनी को झुकना पड़ा तथा फ्रांस के साथ समझौता करना पड़ा। यद्यपि अगादिर संकट टल गया, परन्तु इसके फलस्वरूप जर्मनी और फ्रांस की शत्रुता बढ़ गई और दोनों देश युद्ध की तैयारी करने लगे।

- **बोस्निया संकट** - 1908 में ऑस्ट्रिया ने बोस्निया तथा हर्जेगोविना को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। इससे सर्बिया को प्रबल आघात पहुँचा, क्योंकि इन दोनों प्रदेशों में सर्ब लोगों की आबादी अधिक थी। रूस ने भी सर्बिया का पक्ष लिया तथा ऑस्ट्रिया को युद्ध की धमकी दी, परन्तु जर्मनी ने अपने मित्र ऑस्ट्रिया का पक्ष लेते हुए रूस को चेतावनी दी कि ऑस्ट्रिया पर किया गया आक्रमण जर्मनी पर आक्रमण माना जायेगा। जर्मनी की चेतावनी के कारण रूस को अपमान के घूँट पीकर चुप बैठना पड़ा। परन्तु इस घटना से रूस तथा ऑस्ट्रिया के बीच शत्रुता बढ़ गई।

- **बाल्कन युद्ध** - तुर्की की दुर्बलता का लाभ उठाकर 1911 में इटली ने ट्रिपोली पर आक्रमण किया तथा तुर्की को बाध्य कर ट्रिपोली पर इटली का अधिकार स्वीकार करना पड़ा। इससे बाल्कन - राज्यों को तुर्की की दुर्बलता का पता चल गया। 1912 ई. में यूनान, सर्बिया, बुल्गारिया तथा मोण्टीनिग्रो ने एक संघ बनाया, जिसे बाल्कन संघ कहते हैं। अक्टूबर 1912 में बाल्कन संघ ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार प्रथम बाल्कन युद्ध शुरू हो गया जिसमें तुर्की की पराजय हुई, परंतु युद्ध के बाद हुई लन्दन की संधि से बाल्कन राज्य असंतुष्ट थे। अतः 1913 में दूसरा बाल्कन युद्ध छिड़ गया जिसमें बुल्गारिया की पराजय हुई। इन बाल्कन युद्धों ने यूरोप का वातावरण अशांत तथा विस्फोटक बना दिया। ग्राण्ट तथा टेम्परले का कथन है कि, 1914 के महान युद्ध के लिए कोई घटना इतनी उत्तरदायी नहीं है, जितना की बाल्कन युद्ध।"

16. **तत्कालीन कारण** - ऑस्ट्रिया, हंगरी और सर्बिया में तनाव तो बोस्निया और हर्जेगोविना की समस्या के कारण ही था, लेकिन इसी बीच 28 जून, 1914 को ऑस्ट्रिया के राजकुमार ड्यूक फर्डिनेण्ड की बोस्निया में कुछ क्रांतिकारियों के द्वारा हत्या कर दी गई। इस पर ऑस्ट्रिया, सर्बिया पर आक्रमण करने के लिए किसी अवसर की ताक में था, इस हत्या का सारा दोष उसी पर लाद दिया और जर्मनी से सहायता का आश्वासन पाकर ऑस्ट्रिया ने सर्बिया को युद्ध की चुनौती दे दी। इधर सर्बिया को रूस से सहायता का आश्वासन मिल गया। फलतः उसने ऑस्ट्रिया की अनेक शर्तों को ठुकरा दिया। अत : 28 जुलाई 1914 को ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। रूस ने सर्बिया का पक्ष लेते हुए अपनी सेना की लामबन्दी की घोषणा कर दी। दूसरी ओर जर्मनी ने ऑस्ट्रिया का पक्ष लेते हुए। अगस्त, 1914 को रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 3 अगस्त, 1914 को जर्मनी ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 4 अगस्त, 1914 को इंग्लैण्ड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध का भीषण वीभत्स दृश्य देखना पड़ा।

बाल्कन युद्ध (1912-13 ई.) क्या है?

बाल्कन युद्ध 1878 ई. के बर्लिन सम्मेलन के उपरांत बाल्कन राज्यों के संघ के निर्माण के लिए कई बार प्रयत्न किया गया, किन्तु प्रत्येक समय संघ के निर्माण-कार्य में कोई न कोई बाधा अवश्य उपस्थित हो जाती थी। सन् 1885 ई. मे बल्गेरिया में पूर्वी रूमानिया को अपने राज्य में सम्मिलित किया जिसको सर्बिया का राज्य सहन नहीं कर सका। उसने बल्गेरिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर 14 नवम्बर 1885 को उस पर आक्रमण किया। इस युद्ध ने संघ के निर्माण-कार्य को समाप्त कर दिया।

- सन् 1891 में इस ओर पुनः कदम उठाया गया जब ग्रीस के प्रधानमंत्री ट्रिकोपीज ने सर्बिया की राजधारी बेलग्रेड और बल्गेरिया की राजधानी सोफिया की यात्रा की। दोनों राज्यों ने उसका भव्य स्वागत किया। सर्बिया ने तो संघ निर्माण को स्वीकार किया, किन्तु बल्गेरिया ने उसकी बातों को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि इस समय उसके संबंध ऑस्ट्रिया, जर्मनी और तुर्क साम्राज्य से अच्छे थे।

प्रथम विश्व युद्ध में यूरोप का पाउडर केग (First World War Europe Balkans)

बाल्कन को यूरोप का पाउडर केग कहा जाता है। पाउडर केग का मतलब बारूद से भरा कंटेनर होता है, जिसमें कभी भी आग लग सकती है। बाल्कन देशों के बीच साल 1890 से 1912 के बीच वर्चास्व की लड़ाईयां चलीं। इन युद्ध में साइबेरिया, बोस्निया, क्रोएसिया, मॉन्टेंगरो, अल्बानिया, रोमानिया और बल्गेरिया आदि देश दिखे थे। ये सभी देश पहले ऑटोमन एम्पायर के अंतर्गत आता था, किन्तु उन्नीसवीं सदी के दौरान इन देशों के अन्दर भी स्वतंत्र होने की भावना जागी और इन्होने ख़ुद को बल्गेरिया से आज़ाद कर लिया। इस वजह से बाल्कन मे हमेशा लड़ाइयाँ जारी रहीं। इसलिए 22 वर्षों में तीन अलग अलग लड़ाईयां लड़ी गयीं।

☞ बाल्कन युद्ध (1912-13 ई.)

- **बाल्कन संघ का निर्माण**

- इसी समय इटली ने तुर्की साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और उसकी सेनाओं को कई स्थानों पर परास्त कर ट्रिपोली को अपने अधिकार में किया। बाल्कन राज्यों ने तुर्की की उक्त पराजय से लाभ उठाने का स्वर्ण अवसर समझा।